अध्ययन 2

# परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा

## परमेश्वर की योजना

*"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"* (यूहन्ना 3:16)

परमेश्वर ने एक सुन्दर संसार को बनाया और यह उसका उद्देश्य था कि मनुष्य परमेश्वर की सेवा करें तथा उसकी उपासना करें। परन्तु यह योजना प्रत्येक मनुष्य के द्वारा अर्थात प्रथम मनुष्य से लेकर इस समय तक मेरे तथा आप के द्वारा नष्ट कर दिया गया। हम सब ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और उसके बिना अपनी इच्छा के अनुसार जीवन बिताने के लिये चुन लिया। बाइबल बताती है यही पाप है। इसी कारण मनुष्य जाति बिगड़ गये और इस पृथ्वी पर अव्यवस्था तथा घोर विपत्ति ले आये।

## परमेश्वर का पुत्र

*"इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।"* (रोमीयों 3:23)

परमेश्वर को त्याग कर पाप में पड़ने का परिणाम दुःख भोगना है तथा सर्वदा के लिये परमेश्वर हमें त्याग सकता था। फिर भी परमेश्वर ने संसार से या हमसे ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना पुत्र यीशु को भेज दिया जो स्वंय भी परमेश्वर था। हमारे जीवन के कठिनाइयों में हमारे साथ देने के लिये। परन्तु हमारे समान यीशु ने पाप नहीं किया, वस्तुतः वह हमारे विद्रोह के प्रभावों को कम करने की कोशिश करता रहा।

हमारे विद्रोह के प्रति परमेश्वर का क्रोध यीशु पर पड़ा जो बिल्कुल निष्पाप था। हमारे बदले में उसको दण्डित किया गया और शारीरिक पीड़ा के साथ उसकी मृत्यु हुई। बाइबल बताती है कि जब उसको क्रूस पर चढ़ाया गया तो हमारे अपराधों को वह अपने उपर ले लिया। यीशु मसीह मरा हुआ ही पड़ा नहीं रहा। परमेश्वर ने उसको मरे हुओं में से जिलाया और जब तक परमेश्वर उसको अपने पास उपर नहीं ले गया तब तक दुनियां में बहुतों को दिखाई दिया। यीशु मसीह का जीवन, मृत्यु तथा पुनरुत्थान हमारे लिये स्वर्ग का द्वार खोल दिया ताकि हम अपना सम्बन्ध परमेश्वर के साथ ठीक कर लें।

## परमेश्वर की क्षमा

*"जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उसको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।"* (नीतिवचन 28:13)

परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सही होने से पहले हमें यह कहना चाहिए कि हम अपने विद्रोह के लिये खेद प्रगट करते हैं, और हमें स्वीकार करना चाहिए कि हम ने अपराध किया है तथा हमें परमेश्वर से क्षमा मांगना चाहिए तथा विश्वास करना चाहिए कि यीशु मसीह हमारे बदले में मरा। जब परमेश्वर हमारे अपराधों को क्षमा करते हैं, तब हमारा सम्बन्ध उसके साथ ठीक हो जाता है और हम फिर से अपने जीवन का आरम्भ कर सकते हैं। यह वास्तव में नया जन्म पाने के समान है एक नया जीवन में। क्योंकि परमेश्वर हमें नया ही देखता है। परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा भी देता है, वह भी परमेश्वर है। ताकि हम परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन व्यतित कर सके।

## परमेश्वर का उत्तर

*"यीशु ने उस से कहा मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहूँच सकता।"* (यूहन्ना 14:6)

1. मनुष्य की समस्या
   – अलगाव

2. मनुष्य का प्रयास
   – पतन

3. परमेश्वर का उपाय
   – क्रूस

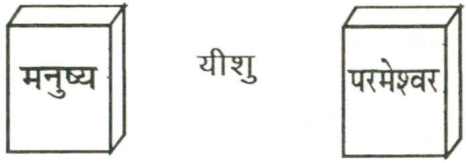


4. मनुष्य का उत्तर
   – मसीह को
   ग्रहण करना

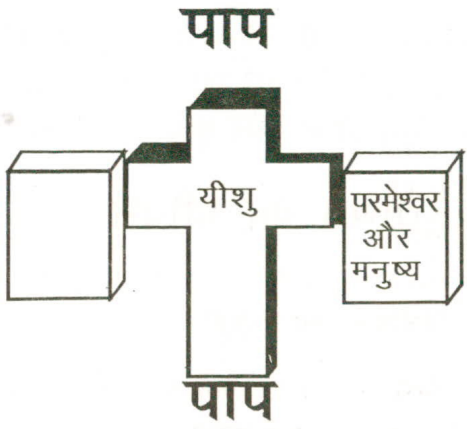

मनुष्य ने हर तरह से प्रयास किया तथा भला कार्य भी किया ताकि परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध सुधारने के लिये अपनी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करें जिस में प्रेम तथा धार्मिक कार्य भी सम्मिलित किया गया है। ये सारी बातें उन्हें उनके लक्ष्य तक नहीं पहुचां सकी क्योंकि परमेश्वर से अलग होने का जो समस्याएँ हमारी हैं, उसके विषय परमेश्वर का उत्तर यह नहीं है। यीशु ही परमेश्वर का उत्तर है।

## हमारा चुनाव

*"यदि तू अपने मुहं से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करें, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।"* (रोमियों 10:9)

यीशु ने कहा कि वह एक दिन संसार का न्याय करने के लिये वापस आएगा, जीवित और मरे हुए दोनों का न्याय करने को। जब यह पूर्ण होगा तो जिन्होंने अपना सम्बन्ध परमेश्वर के साथ ठीक रखा, वे हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति में उसके साथ रहेंगे। परन्तु यदि हमने परमेश्वर को तथा यीशु मसीह के द्वारा उसके उद्धार के योजना को अस्वीकार किया, तब हमें अपना निर्णय का परिणाम भुगतान पड़ेगाः एक अनन्त काल परमेश्वर रहित, प्रेम रहित, मित्र रहित, आशा रहित तथा कोई भी अच्छी वस्तु अथवा सुन्दर वस्तु से परे। परमेश्वर ने हमें चुनाव करने का अवसर दिया है, हमें आज ही चुनाव करना है इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। यह हमारे जीवन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण चुनाव है और यह बात जीवन और मृत्यु से सम्बन्ध रखता है।

## बहुतायत का जीवन

*यीशु ने कहा....."मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं।"* (यूहन्ना 10:10)

परमेश्वर इस संसार को बदलना चाहता है। वह इस कार्य को आप के द्वारा तथा मेरे द्वारा करना चाहता है, हमारे हृदयों में आकर निवास करने

के द्वारा हमारी समस्याओं को, हमारे आनन्द, हमारे परेशानीयों को बाटंना चाहता है तथा हमें बताता है पवित्र आत्मा की सामर्थ के विषय में जो हमें उसकी इच्छा के अनुसार जीवन बिताने में सहायता करता है।

## हमारे उत्तर

चार साधारण कदम है यीशु के कार्यों को समझने के लिये जिसे उसने हमारे लिए कियाः—

1. हमें स्वीकार करना है कि हम परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं (पाप) और परमेश्वर के स्तर से नीचे गिर गए हैं।
2. हमें जरुरत है परमेश्वर की सहायता के द्वारा अपने मार्ग से वापस आना तथा परमेश्वर के मार्ग में बढ़ते जाना (पश्चताप)।
3. हमें विश्वास करना है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है जो क्रूस पर मरा, हमारे अपराधों के दण्ड अपने उपर लिया और इसलिये हम स योग्य हुए कि परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध फिर से हो गया ।
4. हमें विश्वास करना है कि परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया और कि पिता परमेश्वर के दहिने हाथ पर बिठाया। हमें यीशु पर भरोसा करने की आवश्यकता है तथा अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करना है और अपना जीवन उसको सौंपना है। किसी को प्रभुबनाने का अर्थ है उसे अपना मालिक बनाना। जब यीशु हमें कोई कार्य करने के लिये कहता है तो हमें उसकी आज्ञा मानने की आवश्यकता है।

## परमेश्वर का निश्चय

यदि आप प्रार्थना करते है, वह प्रार्थना जो इस अध्ययन के अन्त में दिया गया है (अथवा आप ने इसे दूसरे प्रकार से प्रार्थना किया है) तथा आपने अपने पूर्ण हृदय से प्रार्थना किया है, हरेक वचन का अर्थ समझ लिया है, तब आप एक मसीही विश्वासी है। चाहे आप कुछ अनुभव किया अथवा

नहीं, आप परिवर्तित हो गए है क्योंकि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किया है । वह झूठ बोल नहीं सकता। आप एक शिष्य बन गये हैं अथवा यीशु के अनुयायी बन गए हैं। जो कदम आप ने बढ़ाया है वह केवल आरम्भ है। यह एक नया जन्म है तथा नया जीवन का सुभारम्भ है। अब आप परमेश्वर की संतान है और उसने आप को पवित्र आत्मा दिया है ताकि परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन बिताने के लिये सब सहायता और सामर्थ आप को मिल सके। जिस प्रकार नया जन्मा हुआ बच्चा को बड़ा होने तथा प्रौढ़ बनने के लिये बहुत सारी आवश्यकताएँ हैं उसी प्रकार नया मसीही विश्वासी को भी है। आप इस पुस्तिका के बाकी हिस्से को पढ़े तथा अध्ययन करें ताकि आप को कुछ मौलिक बातों की जानकारी मिल सके जो परमेश्वर आप से करने की इच्छा करता है। अब आप एक मसीही है।

## प्रश्न एवं संकेत :—

1. निम्नलिखित पदों में क्या बताया गया है कि परमेश्वर ने अपना पुत्र यीशु मसीह को संसार में क्यों भेजा? (यूहन्ना 3:16—18, 17:2)
2. परमेश्वर को अप्रसन्न करने (पाप करते रहने) का क्या परिणाम होता है? (यशायाह 59:2)
3. हमें क्या करने की आवश्यकता है? (मरकुस 1:15, प्रेरित 3:19)
4. पाप क्षमा का अर्थ हटा देना तथा भूल जाना इस कथन के आलोक में पढ़े (यूहन्ना 1:9)
5. हम क्या करेंगे यदि हम परमेश्वर को प्रेम करते हैं (2 यूहन्ना 14:23)
6. क्या हम वास्तव में पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं जब हम एक मसीही बन जाते हैं ? (इफिसियों 1:13:14:)
7. अपने प्रोत्साहन के लिये निम्न पदों को पढ़ें : यूहन्ना 1:12,5:24, रोमियों 5:8, इब्रानियों 13:5, तथा यूहन्ना 5:11—12

## प्रार्थना :—

सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह सच है कि मैं ऐसा कार्य करता हूँ कि तेरे स्तर से बहुत नीचे पहुंचा हूँ । बड़ी ईमानदारी से इन सब बातों से निकल जाना चाहता हूँ जिन्हें मैं पाप के रुप में पहचानता हूँ । जो कुछ मैं ने किया है जो तेरी दृष्टि में गलत है,उन सब के लिये मैं तुझ से क्षमा मांगता हूँ । मैं तेरे मार्गों में जाना चाहता हूँ न कि अपने मार्ग में । अपना पुत्र यीशु को क्रुस पर मरने के लिये तूने भेज दिया इसके लिये घन्यवाद । जिसके द्वारा मैं उस दण्ड से बच सकता हूँ जो मुझे मिलना चाहिए था । मैं खुश हूँ कि तु ने यीशु को मृतकों में से जिलाया और वह आज जीवित है । मैं यीशु को अपना जीवन का स्वामी बनाता हूँ कृपया इसी समय मेरे जीवन में आइए ताकि मैं नया बन जाऊं । मेरी प्रार्थना को सुनने के लिये धन्यवाद । कृप्या मेरी सहायता कीजिए इसी समय ताकि अपना शेष जीवन को पवित्र आत्मा की सहायता एवं सामर्थ में बीता सकूं जिसे तू ने मुझे दे दिया है । मैं इस प्रार्थना को यीशु के नाम से मांगता हूँ। आमीन ।